1 कुरिन्थियों अध्याय 16
रविवार, 08 दिसंबर 2019

हम हाल के महीनों में 1 कुरिन्थियों की पत्री का अध्ययन कर रहे हैं, और अब हम अंतिम अध्याय में आ पहुँचे हैं।

प्रेरित पौलुस ने कुरिन्थियों की कलीसिया में कई विषयों को संबोधित किया है। उन्होंने उन प्रश्नों का भी उत्तर दिया है जो उन्होंने उनसे पूछे थे। अध्याय 16 में वह एक अंतिम विषय को संबोधित करते हैं और अपनी पत्री के आखिरी वाक्य कहते हैं।

हम इस अंतिम अध्याय क निम्नलिखित भागों में अध्ययन करेंगे।
हम पहले प्रत्येक भाग में दिए गए पवित्रशास्त्र के वचनों को पढ़ेंगे और फिर उस भाग पर टिप्पणियाँ और अंतर्दृष्टि प्रस्तुत करेंगे।

यरूशलेम के ज़रूरतमंद पवित्र लोगों की सहायता करना (16:1-4)
सेवकाई के कार्य का समन्वय (16:5-12)
उपदेश के शब्द (16:13,14)
सेवा करने वालों का आदर करना (16:15-18)
अंतिम अभिवादन (16:19-24)

यरूशलेम के ज़रूरतमंद पवित्र लोगों की सहायता करना (16:1-4)

1 अब उस चन्दे के विषय में जो पवित्र लोगों के लिये किया जाता है, जैसी आज्ञा मैं ने गलातिया की कलीसियाओं को
दी, वैसा ही तुम भी करो।
2 सप्ताह के पहले दिन तुम में से हर एक अपनी आमदनी के अनुसार कुछ अपने पास रख छोड़ा करे कि मेरे आने
पर चन्दा न करना पड़े।
3 और जब मैं आऊँगा, तो जिन्हें तुम चाहोगे उन्हें मैं चिट्ठियाँ देकर भेज दूँगा कि तुम्हारा दान यरूशलेम पहुँचा दें।
4 यदि मेरा भी जाना उचित हुआ, तो वे मेरे साथ जाएँगे।

ज़रूरतमंदों की देखभाल

प्रेरित पौलुस अन्य कलीसियाओं (जैसे कुरिन्थुस, गलतिया, अन्ताकिया, मकिदुनिया आदि की कलीसियाओं) को यरूशलेम में ज़रूरतमंद पवित्र लोगों के लिये विशेष संग्रह करने के लिये प्रोत्साहित कर रहे थे, जब वे रविवार के दिन एकत्र होते थे। यह संभवतः उस क्षेत्र में आए अकाल के कारण था (प्रेरितों के काम 11:27-30)। यरूशलेम की कलीसिया बड़ी संख्या में विधवाओं की भी देखभाल करती थी (प्रेरितों के काम 6:1-6)। इसमें हम देखते हैं कि परमेश्वर के लोगों की भौतिक आवश्यकताओं के प्रति उत्तरदायी होना कलीसिया की ज़िम्मेदारी है। जबकि हम सुसमाचार के प्रचार के लिये, वचन की सेवकाई करने वालों और हमारी आत्मिक आवश्यकताओं की देखभाल करने वालों के समर्थन के लिये देते हैं, हमें उन लोगों की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिये भी देना चाहिए जिनके पास नहीं है। हम यह शिक्षा नए नियम में कई स्थानों पर देखते हैं।

उदाहरण के लिये याकूब 1:27 पर विचार करें:

याकूब 1:27
हमारे परमेश्वर और पिता के निकट शुद्ध और निर्मल भक्ति यह है कि अनाथों और विधवाओं के क्लेश में उनकी सुधि लें, और अपने आप को संसार से निष्कलंक रखें।

1 तीमुथियुस 5:3-13 में, प्रेरित पौलुस यह निर्देश देते हैं कि स्थानीय कलीसिया द्वारा देखभाल कैसे की जानी चाहिए। वह सिखाते हैं कि हमें उनकी देखभाल करनी चाहिए जो सच में ज़रूरतमंद हैं; जिनका पालन-पोषण उनका परिवार नहीं कर सकता; और जो आत्मिक रूप से स्थानीय कलीसिया की सेवा कर रहे हैं और परमेश्वर के लोगों के बीच अच्छी गवाही रखते हैं।

सप्ताह का पहला दिन

यहाँ ध्यान दें कि प्रारंभिक कलीसिया ने "सप्ताह के पहले दिन" (अर्थात् प्रभु के दिन या रविवार) को एकत्र होना आरंभ कर दिया था और यहूदी सब्त का पालन करना छोड़ दिया था।

साथ ही हम देखते हैं कि जब वे सप्ताह के पहले दिन एकत्र होते थे, तब प्रत्येक व्यक्ति परमेश्वर की दी हुई समृद्धि के अनुसार अपना योगदान साथ लाता था।

धन संबंधी मामलों को बुद्धिमानी से संभालना

यह भी ध्यान देने योग्य है कि पौलुस की सावधानी, कि वे उन लोगों को भेजें जिन्हें कलीसिया स्वयं चुनती थी, ताकि वे यरूशलेम में दान पहुँचाएँ। इससे किसी को भी पौलुस पर धन के दुरुपयोग का आरोप लगाने का कोई अवसर नहीं मिलता। यह हमारे लिये भी परमेश्वर के सेवकों के रूप में धन को सही ढंग से संभालने की एक महत्वपूर्ण शिक्षा है।

इस विषय में पौलुस ने 2 कुरिन्थियों 8:21 में कहा है।

2 कुरिन्थियों 8:21
क्योंकि जो बातें केवल प्रभु ही के निकट नहीं, परन्तु मनुष्यों के निकट भी भली हैं हम उनकी चिन्ता करते हैं।

सेवकाई के कार्य का समन्वय (16:5-12)

5 मैं मकिदुनिया होकर तुम्हारे पास आऊँगा, क्योंकि मुझे मकिदुनिया होकर जाना ही है।
6 परन्तु सम्भव है कि तुम्हारे यहाँ ही ठहर जाऊँ और शरद ऋतु तुम्हारे यहाँ काटूँ, तब जिस ओर मेरा जाना हो उस ओर तुम मुझे पहुँचा देना।
7 क्योंकि मैं अब मार्ग में तुम से भेंट करना नहीं चाहता; परन्तु मुझे आशा है कि यदि प्रभु चाहे तो कुछ समय तक तुम्हारे साथ रहूँगा।
8 परन्तु मैं पिन्तेकुस्त तक इफिसुस में रहूँगा,
9 क्योंकि मेरे लिये वहाँ एक बड़ा और उपयोगी द्वार खुला है, और विरोधी बहुत से हैं।

10 यदि तीमुथियुस आ जाए, तो देखना कि वह तुम्हारे यहाँ निडर रहे; क्योंकि वह मेरे समान प्रभु का काम करता है।
11 इसलिये कोई उसे तुच्छ न जाने, परन्तु उसे कुशल से इस ओर पहुँचा देना कि मेरे पास आ जाए; क्योंकि मैं उसकी बाट जोह रहा हूँ कि वह भाइयों के साथ आए।
12 भाई अपुल्लोस से मैं ने बहुत विनती की है कि तुम्हारे पास भाइयों के साथ जाए; परन्तु उसने इस समय जाने की कुछ भी इच्छा न की, परन्तु जब अवसर पाएगा तब आ जाएगा।

प्रेरित पौलुस अपने यात्रा की योजनाओं को साझा कर रहे थे। जब उन्होंने यह पत्र कुरिन्थियों को लिखा, उस समय वह इफिसुस में थे। उन्होंने पिन्तेकुस्त के पर्व तक इफिसुस में ठहरे रहने की योजना बनाई थी, और उसके बाद कुरिन्थियों की ओर जाने का विचार था, जहाँ वह विश्वासियों के साथ कुछ समय बिताने की आशा रखते थे।

परमेश्वर की अगुवाई के अनुसार चलना

- **वचन 7:**

"...यदि प्रभु चाहें"

हालाँकि उन्होंने कहा, "यदि प्रभु चाहें", जो यह दर्शाता है कि उन्हें अभी भी परमेश्वर से यह जानने की आवश्यकता थी कि उन्हें यह करना चाहिए या नहीं। हमें भी अपने कार्यों की योजना बनाने और सेवकाई का समन्वय करने में परमेश्वर की आवाज़ सुनना और उसकी अगुवाई का अनुसरण करना सीखना चाहिए।

दैवीय अवसरों को पहचानना

- **वचन 9:**

क्योंकि मेरे लिये वहाँ एक बड़ा और उपयोगी द्वार खुला है, और विरोधी बहुत से हैं।

पौलुस ने देखा कि इफिसुस में परमेश्वर ने उसके लिये *"एक बड़ा और प्रभावशाली द्वार"* खोल दिया है ("एक महान और बढ़ते हुए कार्य के लिये अच्छा अवसर"—ईज़ी टू रीड वर्ज़न), यद्यपि वहाँ बहुत से विरोधी भी थे। इसलिये वह उस अवसर के प्रत्युत्तर में इफिसुस में ठहरकर सेवकाई करना चाहते थे। यहाँ हम यह महत्वपूर्ण शिक्षा सीखते हैं कि जब परमेश्वर हमारे लिये कोई अवसर उपलब्ध कराता है, तो हमें उसे पहचानना चाहिए और उस अवसर के अनुसार प्रतिक्रिया देनी चाहिए।

युवा सेवकों को प्रोत्साहित करना

- **वचन 10,11:**

10 यदि तीमुथियुस आ जाए, तो देखना कि वह तुम्हारे यहाँ निडर रहे; क्योंकि वह मेरे समान प्रभु का काम करता है।
11 इसलिये कोई उसे तुच्छ न जाने, परन्तु उसे कुशल से इस ओर पहुँचा देना कि मेरे पास आ जाए; क्योंकि मैं उसकी बाट जोह रहा हूँ कि वह भाइयों के साथ आए।

तीमुथियुस इफिसुस जाते समय कुरिन्थियों में ठहरने वाला था। यह देखना रोचक है कि पौलुस

ने कुरिन्थियों के सामने युवा तीमुथियुस की पुष्टि की और कहा कि *"वह भी मेरी ही तरह प्रभु का काम करता है"*, और वह चाहते थे कि कलीसिया उसे भली प्रकार से ग्रहण करे। पौलुस नहीं चाहते थे कि कोई उसे डराए ("ध्यान रखना कि वह तुम्हारे यहाँ निडर होकर रहे") या उसकी युवावस्था के कारण उसे तुच्छ जाने (*"कोई उसे तुच्छ न जाने"*—1 तीमुथियुस 4:12 देखें)। उन्होंने अनुरोध किया कि वे उसके अल्पकालिक प्रवास के दौरान उसे आशीष दें और *"उसे कुशल से विदा करें।"*

यह हम जैसे वरिष्ठ (अधिक अनुभवी, अधिक स्थापित) परमेश्वर के सेवकों के लिये एक महत्वपूर्ण शिक्षा है। अपने ही कार्यों में व्यस्त रहने के बजाय, हमें युवा सेवकों का समर्थन करना, उन्हें प्रोत्साहित करना और उनकी पुष्टि करनी चाहिए, ताकि वे भी अपने जीवन के लिये परमेश्वर की बुलाहट में आगे बढ़ सकें।

अपुल्लोस

- **वचन 12:**

भाई अपुल्लोस से मैं ने बहुत विनती की है कि तुम्हारे पास भाइयों के साथ जाए; परन्तु उसने इस समय जाने की कुछ भी इच्छा न की, परन्तु जब अवसर पाएगा तब आ जाएगा।

अपुल्लोस के साथ कार्य करते समय, जो उस समय तक स्वयं एक स्थापित सेवक थे, पौलुस ने उन्हें अपने निर्णय स्वयं लेने की स्वतंत्रता दी और यह नियंत्रित या निर्देशित नहीं किया कि एक अन्य वरिष्ठ सेवक को क्या करना चाहिए।

उपदेश के शब्द (16:13-14)

- **वचन 13,14:**

13 जागते रहो, विश्वास में स्थिर रहो, पुरुषार्थ करो, बलवन्त होओ।
14 जो कुछ करते हो प्रेम से करो।

प्रेरित पौलुस कुरिन्थियों के विश्वासियों को इन अंतिम उत्साहवर्धक शब्दों के साथ छोड़ते हैं। वचन 13 में जिन शब्दों का प्रयोग किया गया है, वे सभी सैनिक शब्द हैं:

जागते रहो

इसका शाब्दिक अर्थ है जागते रहना, चौकन्ने रहना, निरन्तर सावधान रहना, कहीं ऐसा न हो कि शत्रु अचानक आक्रमण कर दे।
उदाहरण के लिये, पवित्रशास्त्र हमें सिखाता है कि हम जागते रहें और प्रार्थना करें ताकि हम परीक्षा में न पड़ें (मत्ती 26:41)। हमें संयमी और चौकन्ने भी रहना चाहिए, क्योंकि हमारा एक विरोधी है जो हमारे विरुद्ध लाभ उठाने के अवसर ढूँढ़ता रहता है (1 पतरस 5:8)।

विश्वास में दृढ़ रहो

विश्वास में अडिग बने रहो, क्योंकि ऐसे शत्रु हैं जो तुम्हारे विश्वास को नष्ट करने का प्रयास करते हैं।

सैनिक दृष्टि से, इसका अर्थ है अपनी पंक्ति बनाए रखना; अव्यवस्थित न होना और पीछे न हटना; अपनी पंक्तियों को टूटने न देना; एक-दूसरे के निकट बने रहना।

पुरुषार्थ करो

यह शब्द नए नियम में केवल इसी स्थान पर प्रयोग किया गया है। इसका शाब्दिक अर्थ है "पुरुष के समान व्यवहार करो।" सैनिक अर्थ में इसका तात्पर्य है कि जब आक्रमण हो, तो घबराओ नहीं; अपने स्थान पर डटे रहो; विरोध करो; आगे बढ़ो; प्रबल प्रहार करो; और जय प्राप्त करो।

बलवन्त बनो

सैनिक दृष्टि से इसमें शामिल है: बल में बढ़ते जाना। स्वयं को सक्षम बनाए रखना। जय प्राप्त करने की विधि सीखना। संघर्ष में या तो प्राण देना या जीतना। यदि सेना की किसी टुकड़ी पर शत्रु की अत्यधिक शक्ति से आक्रमण हो, तो उस टुकड़ी को बल देना और अपनी स्थिति बनाए रखना। अपना सारा साहस जुटाना और एक-दूसरे को सहारा देना।

जो कुछ तुम करते हो, प्रेम से करो

जैसा कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों 13 में उन्हें सिखाया था, वह उन्हें स्मरण दिलाते हैं कि हर कार्य प्रेम से प्रेरित होकर किया जाए।

सेवा करने वालों का आदर करना (16:15-18)

15 हे भाइयो, तुम स्तिफनास के घराने को जानते हो कि वे अखया के पहले फल हैं, और पवित्र लोगों की सेवा के लिये तैयार रहते हैं।
16 इसलिये मैं तुम से विनती करता हूँ कि ऐसों के अधीन रहो, वरन् हर एक के जो इस काम में परिश्रमी और सहकर्मी है।
17 मैं स्तिफनास और फूरतूनातुस और अखइकुस के आने से आनन्दित हूँ, क्योंकि उन्होंने तुम्हारी घटी को पूरा किया है।
18 उन्होंने मेरी और तुम्हारी आत्मा को चैन दिया है, इसलिये ऐसों को मानो।

स्तिफनास कुरिन्थियों के पहले विश्वासियों में से था (1 कुरिन्थियों 1:16), और उसने तथा उसके घराने ने परमेश्वर के लोगों की व्यवहारिक रूप से सेवा करने में अपने आप को समर्पित कर दिया था। फूर्तुनातुस और अखैकुस संभवतः स्तिफनास के घराने के सेवक थे, जो उसके साथ पौलुस की सेवा करने के लिये आए थे। पौलुस उनके कार्य की सराहना करते हैं और कुरिन्थियों के विश्वासियों को ऐसे लोगों का आदर करने की शिक्षा देते हैं।

अंतिम अभिवादन (16:19-24)

19 आसिया की कलीसियाओं की ओर से तुम को नमस्कार; अक्विला और प्रिस्का का और उनके घर की कलीसिया का भी तुम को प्रभु में बहुत बहुत नमस्कार!
20 सब भाइयों का तुम को नमस्कार। पवित्र चुम्बन से आपस में नमस्कार करो।
21 मुझ पौलुस का अपने हाथ का लिखा हुआ नमस्कार।
22 यदि कोई प्रभु से प्रेम न रखे तो वह शापित हो। हे हमारे प्रभु, आ!

23 प्रभु यीशु का अनुग्रह तुम पर होता रहे।
24 मेरा प्रेम मसीह यीशु में तुम सब के साथ रहे। आमीन।

लाइफ़ ग्रुप अध्ययन मार्गदर्शिका

रविवार, 08 दिसंबर 2019
1 कुरिन्थियों अध्याय 16

यह लाइफ ग्रुप चर्चाओं में उपयोग के लिए एक सरल मार्गदर्शिका है। हमारा उद्देश्य रविवार के संदेश के अनुप्रयोग पर ध्यान केंद्रित करना है—कि कैसे प्रत्येक व्यक्ति वचन का करने वाला बन रहा है और अपने जीवन को परमेश्वर के पवित्र वचन पर बना रहा है। लाइफ ग्रुप की सभा सामान्यतः 2 घंटे की होती है। प्रत्येक लाइफ ग्रुप में लगभग 12-15 लोग होते हैं।

तैयारी

लाइफ ग्रुप बैठक की तैयारी के लिए, आप Sermon Key Points (पाँच मिनट में संदेश का सार) या पूरा रविवार का संदेश सुन सकते हैं। आप रविवार के संदेश के नोट्स भी देख सकते हैं। यह सभी "All Peoples Church Bangalore-ऑल पीपल्स चर्च बैंगलोर" मोबाइल ऐप में या ऑनलाइन **apcwo.org/sermons** पर उपलब्ध हैं। लाइफ ग्रुप बैठक के लिए प्रार्थना करें और पवित्र आत्मा के कार्य और सेवकाई को आमंत्रित करें।

स्वागत

लाइफ ग्रुप बैठक की शुरुआत प्रार्थना, आराधना और किसी मनोरंजक गतिविधि के समय से हो सकती है।

परमेश्वर के वचन को सुनें

निम्नलिखित शास्त्र खंड पढ़ें: *1 कुरिन्थियों अध्याय 16*

मिलकर परमेश्वर के वचन की जाँच करें

कृपया इनमें से कुछ प्रश्नों पर मिलकर चर्चा करें, और लोगों को अपनी समझ साझा करने का अवसर दें। हम प्रत्येक व्यक्ति को प्रोत्साहित करते हैं कि समूह चर्चा के दौरान अपने व्यक्तिगत सीख को लिख लें।

1. इस अंतिम अध्याय से कौन-सी प्रमुख बातें हैं जो आपके हृदय से बात करती हैं?

यदि समय अनुमति दे, तो प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम तीन मिनट) लेकर एक या दो मुख्य सीख साझा करे और यह बताए कि वे इसे अपने विशिष्ट जीवन परिस्थितियों में कैसे लागू होते हुए देखते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

अपने जीवन और आत्मिक यात्रा को साझा करते हुए संगति करें

प्रत्येक व्यक्ति कुछ मिनट (अधिकतम 3 मिनट) लेकर परमेश्वर के साथ अपने जीवन से संबंधित कुछ भी साझा करे—जो कुछ परमेश्वर उन्हें सिखा रहा है, प्रार्थना के उत्तर की कोई गवाही, या कोई विशेष चुनौती जिसके लिए वे प्रार्थना चाहते हैं। प्रत्येक व्यक्ति को भाग लेने और साझा करने के लिए प्रोत्साहित करें।

एक-दूसरे को प्रोत्साहित करें—प्रार्थना और सेवकाई के द्वारा

दो या तीन लोगों के छोटे समूहों में बँट जाएँ और बारी-बारी से आज जो सीखा गया है उसके प्रकाश में परमेश्वर को धन्यवाद दें और एक-दूसरे के लिए प्रार्थना करें। पवित्र आत्मा की अगुवाई सुनें। पवित्र आत्मा के वरदानों के बहने की अपेक्षा रखें—चंगाई, चमत्कारों की रिहाई, भविष्यवाणी आदि के द्वारा।

पुनः एकत्रित हों और इन विषयों के लिए मिलकर प्रार्थना करें:

1. *परिवारों की सुरक्षा और सुदृढ़ता के लिए*
2. *कलीसिया के रूप में हम पर परमेश्वर के पवित्र आत्मा का एक शक्तिशाली उंडेलाव हो, और हमारे द्वारा हमारे नगर और राष्ट्र में बहुतों को आशीष मिले। केवल परमेश्वर के आत्मा का सामर्थी कार्य ही हमारे नगर और राष्ट्र को बदल सकता है।*
3. *BUILD TO IMPACT (प्रभाव के लिए निर्माण करें) परियोजना के लिए—भूमि की खोज और अधिग्रहण की प्रक्रिया में परमेश्वर के हाथ की अगुवाई के लिए, और इस परियोजना को पूरा करने के लिए पर्याप्त से भी अधिक वित्तीय प्रावधान के लिए।*

अंत में मिलकर परमेश्वर को धन्यवाद देते हुए समाप्त करें।

उपयोगी संसाधन

हर रविवार सुबह 10:30 बजे (भारतीय समय, GMT+5:30) हमारी ऑनलाइन संडे चर्च सेवा का लाइव प्रसारण देखें। पवित्र आत्मा से परिपूर्ण, अभिषिक्त आराधना, वचन और चंगाई, चमत्कार तथा छुटकारे की सेवा।
यूट्यूब: https://youtube.com/allpeopleschurchbangalore
वेबसाइट: https://apcwo.org/live

हमारी अन्य वेबसाइट्स और निःशुल्क संसाधन:
चर्च: https://apcwo.org
निःशुल्क संदेश: https://apcwo.org/resources/sermons
निःशुल्क पुस्तकें: https://apcwo.org/books/english
दैनिक भक्ति-वचन: https://apcwo.org/resources/daily-devotional
यीशु मसीह: https://examiningjesus.com
बाइबल कॉलेज: https://apcbiblecollege.org
ई-लर्निंग: https://apcbiblecollege.org/elearn
वीकेंड स्कूल्स: https://apcwo.org/ministries/weekend-schools
काउंसलिंग: https://chrysalislife.org
संगीत: https://apcmusic.org
मिनिस्टर्स फेलोशिप: https://pamfi.org
चर्च ऐप: https://apcwo.org/app
चर्चेस: https://apcwo.org/ministries/churches
विश्व मिशन: https://apcworldmissions.org